Journal
Of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

जाटों की ऐतिहासिक गौरव – गाथा : गढ़ी

डॉ0 शिल्पी गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

समीर प्रताप सिंह
शोधार्थी
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सार – संक्षेप

प्रस्तुत शोध – पत्र भरतपुर में जाट शासकों द्वारा, प्रारम्भिक संघर्षमय चरण की यात्रा प्रस्तुत करने का प्रयास है जिसमें अपेक्षाकृत अपर्याप्त साधनों में अपने भू – भाग तथा अपने सिनिसनवार रक्त को प्रतिकूल समय में भी किस प्रकार मिटटी के बनाये हुए सुरक्षात्मक स्मारकों जिन्हें गढ या गढ़ी कहा गया के माध्यम से सुरक्षित रखा गया।

बीज शब्द – गढ़ी, सिनसिनवार, सहोर, ब्रज, मुरसान आदि।

मुगल शासक औरंगजेब की धर्मान्ध नीति एवं आर्थिक कारणों से दिल्ली के आसपास एवं ब्रज के क्षेत्र के कृषि प्रियजाटों ने शस्त्र उठाने का निर्णय किया। इस क्षेत्र में जाटों की विभिन्न पालें मुगल सम्राट जहॉगीर के समय से ही सक्रिय थी और उस समय भी ये गुगल आर्थिक नीतियों से त्रस्त थी परन्तु इनकी अधिक कठोरता अभी तक दिखाई नहीं गई थी। औरंगजेब के शासक बनने के बाद अगस्त 1660 ई में मथुरा परगने का फौजदार अब्दुन्नवी को नियुक्त किया गया । वह कटटर मजहबी एवं मुस्लिम धर्म परस्त था उसने 1661–1662 ई में विषाल जामा मस्जिद हिन्दु मंदिरों के खण्डहर पर बनवाई ।[1] अब्दुन्नबी, औरंगजेब की मूर्ति भंजक नीति से प्रेरित था। इस प्रकार आगे चलकर 1670 ई में मथुरा का नाम औरंगजेब के आदेष पर इस्लामाबाद रख दिया गया। [2] 1669 ई में आलमगीर द्वारा हिन्दु मंदिरों को तोड़न के फरमान जारी किये । इन सभी अत्याचारों से क्रोधित होकर ब्रज मंडल के जाट किसानों द्वारा स्वाधीनता एवं धर्म की रक्षा का बीड़ा उठाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि जाटों का उत्थान मुगल सम्राट औरंगजेब की अदूरदर्षी नीति का परिणाम था जिसके कारण ब्रज मण्ड़ल के जाटों ने राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई।

औरंगजेब की असहिष्णुता की भावना ने ब्रज मण्डल के जाटो, किसानों एवं जमीदारों को साथ आने के लिए प्रोत्साहित किया। इस क्षेत्र में विभिन्न परगने थे जो कि घने जंगलों और दलदल से भरे थे। इस दलदली भूमिखण्ड पर इन उत्साही जाटों ने अपने साधारण गॉवों को मिट्टी की गढ़ियों का रूप दे दिया जिससे ये संगठित होकर अत्याचार का विरोध कर सके। लगातार पड़ते अकाल, मुगल सैनिकों के अत्याचारके प्रभाव से ये

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

लोग डाकू बन गये तथा सरदार बनने के लिए प्रेरित हुए। इन लोगो ने जुल्म सहन करने की अपेक्षा लड़ने का निष्चय किया। ब्रज मण्डल के जाटों ने धर्म, राजनीति एवं आर्थिक कारणो को आधार बनाकर इस क्षेत्र में नवीन आन्दोलन को जन्म दिया। इसी कारण संसाधनों का अभाव होते हुए इन्होनें मिट्टी की गढ़ियॉ बनाई एवं घने जंगलों का सहारा लिया।

इस नीवन आंदालन का नेतृत्व सिनसिवार गोत्र के जाट गोकुला ने किया। गोकुला जाअ ने बीहड़ जंगल एवं मुगलों के राजपथ पर लूटपाट मचा दी। [3] गोकुला का मूल नाम ''ओला'' [4] था, इसका जन्म सिनसिनी में हुआ । यह अपने पिता के साथ यमुना के पार जाकर बस गया था तथा जल्दी ही इसने दिल्ली के पास 'तिलपत' की जमींदारी प्राप्त कर दी । इस प्रकार जब गोकुला ने विप्लव किया तो अंधिकांष जाट जमींदार एवं मजदूर किसान इसके साथ हो गये। इसने विप्लवकारियों को बन्दूकें देकर अपनी सेना में सिपाही बना लिया। इसके फलस्वरूप कई जाट गढ़ियों का विकास हुआ इन गढियों ने भविष्य में बनने वाले जाट राज्य भरतपुर की नींव डालने का कार्य किया।

प्रमुख गढ़ियॉः–

1) सहोर गढ़ी

वर्तमान मे यह मथुरा जिले के खंदौली तहसील के अन्तर्गत आता है। यह मथुरा, आगरा तथा हाथरस के बीच में पड़ता है। इसका अन्य नाम सुरहा भी है। यह अब्दुन्नबी के समय जाट विप्लव कारियों का मुख्य स्थान था। अप्रेल 1669 ई में अब्दुन्नबी ने सहोर गढ़ी पर आक्रमण कर दिया तथा इस पर कब्जा करके आसपास के सभी गॉवों को नष्ट कर दिया । इस समय गोकुला द्वार प्रत्युत्तर दिया गया परिणाम स्वरूप 10 मई 1669 ई0 को अब्दुन्नबी गोली से मारा गया। [5] इस प्रकार इस विप्लव के प्रांरभिंक समय में सहोर गढ़ी मुगल फौजदार अब्दुन्नबी की मृत्यु के लिए गौरवान्वित स्थल के रूप में जानी जाती है। इस जीत के बाद यहॉ से गोकुला को मुगल सैनिकों के हथियार एवं युद्व सामग्री प्राप्त हुई जो अन्य अभियानों विषेषकर सादाबाद क्षेत्र में मुगल ठिकानों पर लूटमार करने में विषेष रूप से लाभकारी सिद्व हुई। इससे गोकुला का भी साहस बढ़ा और अन्य जाट सरदार भी उसके साथ हो गये।

2) सादाबाद व मुरसान क्षेत्र की गढ़ियाँ :–

वर्तमान में मुरसान एवं सादाबाद कस्बा उत्तर प्रदेष राज्य के हाथरस जिले में स्थित है। बीरवर गोकुला के समय ये जाटों के मुख्य गढ़ हुआ करते थ। इस क्षेत्र में जाटों की तीन गढ़ियॉ रेवाडा, चंदरराव और सरखरू प्रमुख थी। 5 दिसम्बर 1669 ई में हसन अली खॉ के नेतृत्व में सादाबाद और मुरसान की ओर मुगल सेना द्वारा कुच किया गया तथा यहॉ की तीनों गढ़ियों रेवाडा, चंदरख और सरखरू की घेरा बंदी कर ली गई। जीतने की आषा न देखकर इन गढ़ियों के सैनिकों द्वारा अपनी स्त्रियों को जौहर करवा दिया गया एवं स्वयं मृत्यु वरण हेतु दुष्मनों पर टूट पडे। [6] इस विजय के बाद हसनअली क्षॉ को 3000 जात व 2000 सवार का मनसबदार घोषित कर मथुरा का फौजदार नियुक्त किया गया।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

3) तिलपत गढ़ीः–

तिलपत वर्तमान में हरियाणा राज्य के फरीदाबाद जिले में स्थित है। गोकुला के समय यह जाटों का मुख्य गढ़ था। यह दिल्ली से मात्र 12 मील दक्षिण पूर्व में स्थित था।[7] इस गढ़ी का निर्माण संभवतः गोकुला के पूर्वज उदयसिंह सिंधी ने करवाया था। महाभारत के समय इसका नाम तिलपथ हुआ करता था। महाभारत युद्व शुरू होने से पहले पाण्डवों द्वारा कौरवों को एक संधि प्रस्ताव भेजा था जिसमें श्री कृष्ण ने 5 गॉव पाण्डवों को देने की मॉग की थी। इन 5 गॉवों में एक गॉव तिलपत था।[8] (अन्य श्रीपत, बागपत, सोनीपत, पानीपत)। तिलपत में पॉडवों द्वारा यज्ञ किया गया था, इसी स्थान पर वर्तमान में बाबा सूरदास की समाधि बनी हुई है।दिसम्बर 1669 ई में मथुरा का नवनियुक्त फौजदार हसनअली खॉ अन्य फौजदारों के साथ गोकुला का पीछा करते हुए तिलपत पहुॅच गया। गोकुला की सेना 20 हजार की थी उसने गढ़ी के जंगलों में मोर्चा संभाला परन्तु तीन दिन के संघर्ष के बाद मुगल सेना ने तिलपत की गढ़ी को हथिया लिया और गोकुला को बंदी बना लिया गया।[9] गोकुला को आगरा ले जाकर निर्दयता से मार दिया गया।

4) अऊ की गढ़ीः–

अऊ वर्तमान में राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित है यह भरतपुर से 29 किलोमीटर तथा डीग तहसील से दक्षिण–पूर्व में 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। एक ग्राम पंचायत (ग्राम पंचायत कोड–074352) है। मुगल सम्राट औरंगजेब के समय में यह एक परगना (मुहाल) था। जिससे लगभग 2 लाख रूपये का वार्षिक राजस्व मिलता था।[10] यहॉ पर सुरक्षा एवं राजस्व वसूलने हेतु अष्वारोही एवं अन्य सैनिक तैनात रहते थे। यहॉ जाट क्रांतिकारियों की लूटपाट का डर था इसलिए मुगल सम्राट औरंगजेब के द्वारा एक थाना अऊ में स्थापित कर दिया गया था। इस थाने की कमान लालबेग खॉ के पास थी। यह थानेदार अत्यधिक दुराचारी एवं क्रूर था।[11] चूंकि यह सिनसिनी के पास स्थित था इसलिए वहॉ के नवयुवक जाट सरदार राजाराम की नजर में खटकता था। राजाराम द्वारा गोवरधन मेले की आड में गढ़ी के चारों ओर लकड़ियॉ व घास–फूॅस में आग लगा दी गई जिससे भगदड़ मच गई। इसी अफरा–तफरी में राजरामने थानेदार लालबेग खॉ को मौत के घाट उतार दिया गया तथा अऊ को लूट लिया गया।[12]

Journal
Of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

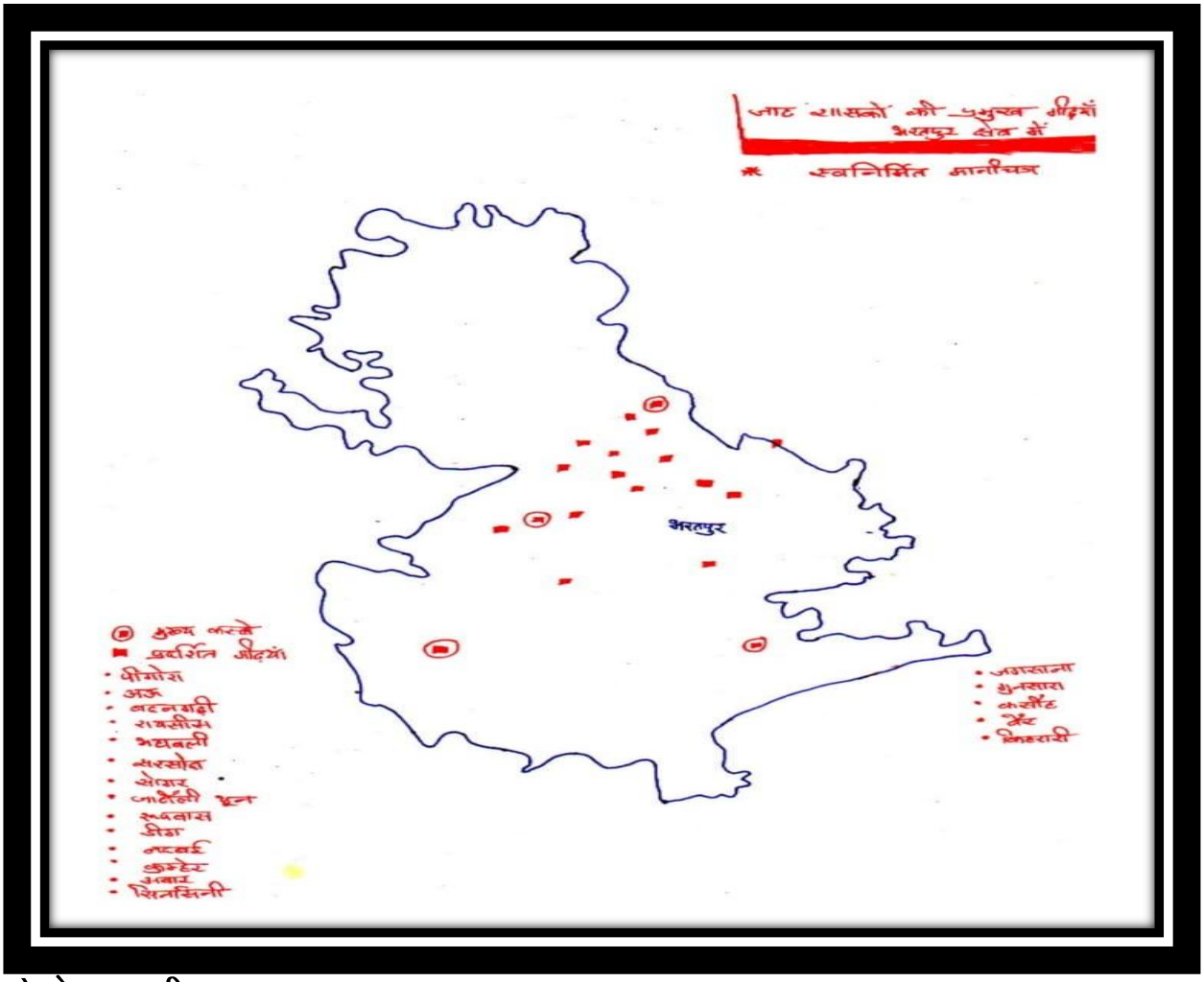

5)सोगर गढ़ीः–

सोगर गॉव कोड– 074597 भरतपुर जिले की कुम्हेर तहसील में स्थित है।[13] यह भरतपुर मुख्यालय से 6 किलोमीटर तथा कुम्हेर तहसील से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जाट नेता राजाराम के समय यह गढ़ी भयानक जंगलों से घ्झिरी थी और मुगल आक्रमणों से सुरक्षित रहने हेतु एक अच्छा विकल्प थी। इसके दोनो ओर बाणगंगा व गंभीरी नदी बहती थी। इस गढ़ी पर सोगरवाल जाटों का संगठनकर्ता रामचेहरा (राम की चाहर) नामक नव युवक था।[14] इसने सोगर के आस–पास की गढ़ियों को सुरक्षित व संगठित किया। राम चेहरा को गोत्र के विषय के संषय है। ये संभवतः सोगरवाल था और जाहर गोत्र की माता होने के कारण राम की राहर नाम से पुकारा जाता था क्योंकि इस समय तक गॉवों में माता के गोत्र के अनुसार नाम लेना भारत की परम्परा में प्रचलित था। राजाराम एवं राम की चाहर की मृत्यु के बाद भी सोगरगढ़ी जाट विद्रोहों का प्रमुख स्थल बनीं रही। सिनसिनी पर अधिकार करने के लिए सोगर गढ़ी पर अधिकार करना आवष्यक था। औरंगजेब ने बिषन सिंह को जाटों का दमन करने हेतु नियुक्त किया इस क्रम में सोगर गढ़ी को विजित करना बहुत जरूरी था। आमेर राजा बिषन सिंह द्वारा मई 1691 ई

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

में सोगर का घेरा डाला। इस समय सोगरगढ़ी पर सोगर के जमीदार अचला सागर का प्रभाव था इसने प्रभावषाली सैनिक दस्ता तैयार कर लिया था। इस गढ़ी की स्थिति इस प्रकार थी कि अबार कासौट, पींगौरा की गढियॉ इसके रास्तें में आती थी। सोगर गढ़ी का दरवाजा बहुत छोटा था परन्तु बिषन सिंह एवं हरीसिंह(पेषगार) सेना लेकर उसमें घुस गयें एवं 500 क्रांतिकारी जाटों को बंदी बना लिया गया। इस प्रकार सोगर गढ़ी पर आमेर नरेष बिषन सिंह का अधिकार हो गया।

6)जाटौली थून गढ़ी

जाटौली थून वर्तमान में एक गॉव है जो कि राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले की डीग तहसील में स्थित है। यह भरतपुर जिला मुख्यालय से 42 किलोमीटर तथा डीग तहसील मुख्यालय से 16 किलोमीटर की दूरी पर है। सिनसिनी के जाट सरदार राजाराम के समय यह गढ़ी कठूमर परगना में आती थी। राजाराम विद्रोह के समय में सिनसिनी छोडकर जाटौली थून में आ गया और यहॉ पर जमींदारी संभाली। इस समय 40 गॉवों की जमींदारी राजाराम के हाथों में आ गई अतः इसने यहॉ गढ़ बनवाया।[15]

यहॉ का जमीदार बनने के बाद मुगल सम्राट औरंगजेब ने राजाराम को दरबार में आमंत्रित किया क्योंकि इस समय मुगल दरबार जाटों को दबाने के लिए नम्रता का सहारा ले रहा था। जाटौली थून की गढ़ी राजाराम के उत्थान में मील का पत्थर साबित हुई। इसी कारण राजाराम को मथुरा का फौजदार नियुक्त कर दिया गया। [16]

थून गढ़ी के अवशेष

7) अवार गढ़ी

अवार गॉव राजस्थान राज्य में भरतपुर जिलें की तहसील कुम्हेर में स्थित है। यह भरतपुर मुख्यालय से 13 किलोमीटर उत्तर में तथा कुम्हेर तहसील से 11 किलोमीटर दूर पड़ता है। अवार की गढ़ी यहीं स्थित थी। इस गढ़ी का निर्माण सिनसिनवार गोत्र के इन्दुराज ने करवाया था।[17] राजाराम के समय में इन्दुराज के वंषजों ने जाट विप्लव में इसका साथ दिया था। आमेर के राजा बिषन सिंह ने सोगर गढी के पतन के बाद 1691

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

ई. में अवार पर घेरा डाला। अवार गढी का नेतृत्व अलिया जाट कर रहा था। इस समय राजपूत सेनापति हरिसिंह को 10 माह का घेरा अवार गढ़ी पर डालने के बाद सफलता मिली थी क्योंकि इसे अपनी सेना को 2 टुकड़ियों में बॉटना पड़ता था जिसमें एक टुकडी अवार के आस–पास की गढ़िरूों के आक्रमण को विफल करती थी तथा दूसरी टुकडी अवार गढ़ी के जाट सैनिको का सामना करती थी। अन्त में फरवरी 1692 ई. को अवार गढ़ी पर कब्जा हो गया तथा मार्च 1692 ई0 को इसकी खबर मुगल दरबार में पहॅुचाई गई।[18] आमेर नरेष बिषन सिंह ने अवार गढ़ी की जमींदारी रूद्रमन कछवाहा को दे दी।

8) पींगौरा गढ़ी

वर्तमान में पींगौरा एक गॉव है। यह राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले की नदबई तहसील में आता है। इसकी स्थिति भरतपुर जिला मुख्यालय से 26 किलामीटर दूर पष्चिम मे है तथा यह नदबई तहसील मुख्यालय से 19 किलामीटर की दूरी पर पड़ता है। पींगौरा गढ़ी इसी ग्राम के पास स्थित थी। यह अवार गढ़ी से दक्ष्झिण–पष्चिम में 18 मील की दूरी पर थी।[19] राजाराम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र फतेहसिंह कई गढियों का नेतृत्व कर रहा था। इनमें पींगौरा गढ़ी भी शामिल थी। अवार गढ़ी का पतन हो जाने के बाद बिषन सिंह ने पीगौरा गझी की ओर रूख किया। इसके समय जाट सरदार फतेहसिंह स्वयं गढ़ी की रक्षा के लिए वहॉ उपस्थित था। अक्टूबर 1692 ई में बहुत मषक्कतों के बाद पींगौरा गढ़ी पर आमेर नरेष का अधिकार हो गया। जाट सरदार फत्हसिंह अपने चाचा चूडामन के पास सौंख–गूर्जर गढी में भाग गया। चूकि पींगौरा गढ़ी एक मजबूत गढी थी अतः इसे राजपूत सेनाओं ने अपनी छावनी बनाने का निर्णय लिया। सेनापति हरिसिंह खंगारौत के बड़े पुत्र गजसिह को राजा बिषन सिंह ने पींगौरा गढ़ी का थानेदार बनाया। स्वयं हरिसिंह ने इस गढ़ी में परिवार के साथ रहने का निष्चय किया।[20]

सन्दर्भ सूची

1 मासिरे– आलमगिरी, पेज 53, मुंषी देवी प्रसाद , औरंगजेबनामा (अनुवाद) भाग –1 1909 ई. बम्बई।
2 मासिरे– आलमगिरी, पेज 51 एवं 60, वीर विनोद पेज–701
3 मासिर उर उमरा खण्ड–1 पेज 436 , मनूची भाग– 2 पेज 325
4 औरंगजेब नामा भाग –2 पेज 29
5 मासिर उल उमरा–पेज 436, औरंगजेबनामा–भाग2 पेज–14 वीर विनोद पेज –700 ग्राउस स 36,151,340
6 औरंगजेबनामा– भाग 2, पेज–17 कानूनगो (जाट) पेज–39
7 उपेन्द्रनाथ शर्मा–भाग1 पेज 95
8 हरियाना पास्ट एंड प्रजेन्ट, सुरेष के.शर्मा (2006) मित्तल पब्लिकेषन पेज– 175
9 ईसरदास– पेज 52 कानूनगो– (जाट) पेज 39 देष राज पेज 630
10 कानूनगो (जाट) पेज–40
11 अऊ का टीला , नत्थन सिंह पेज– 10

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

12 सहयोग , मार्च 15, 1945 ई. (1941–1946ई.) भरतपुर राज्य का पाक्षिक प्रषासनिक समाचार पत्र
13 वेब पेज– इंडियन विलेज डाइरेक्टरी
14 वेन्डल– पेज 15, सरकार (औरगजेब) भाग–5 पेज 296
15 उपेन्द्रनाथ शर्मा भाग–1 पेज 105 , एम. एफ. ओडायर–भाग 3 पेज 25
16 सरकार (औरंगजेब) भाग 5 पेज 296 एम एफ ओडायर– भाग 3 पेज 26
17 उपेन्द्रनाथ शर्मा भाग–1 पेज 156
18 वीरेन्द्र स्वरूप भटनागर हिस्ट्री ऑफ राजपूताना ड्यूरिंग एटीन्थ सेन्चुरी (1700–1750 ई) शोध ग्रंथ, राजस्थान विष्वविद्यालय अगस्त, 1958 ई0।
19 उपेन्द्रनाथ शर्मा – भाग 1, पेज 128
20 सुजान चरित्र, पेज 234, अखबारात (जयपुर रिकार्ड)